

प्रतिष्ठित लोक-कथाएँ

विक्रम और बेताल



MAPLE PRESS
Bringing stories to every child



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

 **KAPWING**



विक्रमादित्य बहुत ही प्रसिद्ध और ज्ञानी राजा था। यह कहानी आपको बताएगी कि विक्रम और बेताल कैसे मिले। आइए एक कहानी सुने जो बेताल ने विक्रम को सुनाई।



बहुत पुरानी बात है, विक्रमादित्य नाम का बहुत ही प्रसिद्ध और बुद्धिमान राजा था। राजा हर सप्ताह एक आम सभा लगाया करता था जिसमें वह सभी लोगों से मिलता था। इस सभा में एक भिखारी आता था और राजा को फल देकर जाता था। राजा जानना चाहता था, कि यह भिखारी उसे फल क्यों देता है?

तब भिखारी ने राजा से कहा - अगर तुम फल का रहस्य जानना चाहते हो तो तुम्हें मेरे घर आना पड़ेगा।



यह सुनकर राजा भिखारी के घर पहुंचा और उसे प्रश्न भरी आंखों से देखा। भिखारी बोला - “राजा घने जंगल में एक शव पेड़ पर उल्टा लटका हुआ है। उसे लेकर मेरे पास आओ। तब मैं तम्हें फल का रहस्य बताऊंगा।”

राजा जंगल में गया और उसने वहां शव को पेड़ पर उल्टा लटका देखा। जैसे ही उसने शव को उतार कर अपने कंधे पर रखा, वैसे ही वह बोलने लगा।



राजा बहुत हैरान हुआ। शव बोला कि मेरा नाम बेताल है। मैंने सुना है कि तुम नेक और दयालु राजा होने के साथ-साथ बुद्धिमान भी हो। मैं तम्हें एक कहानी सुनाता हूँ और कहानी सुनाकर तुमसे एक प्रश्न पूछूँगा। तुम्हें उसका सही जवाब देना होगा। अगर तुम्हारा जवाब सही हुआ तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा नहीं तो तुम्हें मार डालूँगा।

बेताल ने कहानी सुनाना शुरू की। बहुत समय पहले धवल नाम का एक धोबी था। एक दिन जब वह नदी किनारे कपड़े धो रहा था, तब उसे एक सुन्दर लड़की दिखी, जिससे उसे प्रेम हो गया। वह भी एक धोबी की लड़की थी। जल्दी ही धवल ने उससे शादी कर ली और दोनों बहुत खुशी-खुशी रहने लगे।



त्योहारों का मौसम आया तो लड़की का भाई धवल के घर आया और बोला क्यों न तुम मेरे घर चलो, वहाँ सभी मिलकर त्योहार मनाएँगे। यह सुनकर लड़की बहुत खुश हुई और धवल भी चलने को राजी हो गया।

अगले दिन तीनों भाई के घर की ओर पैदल चल दिये। रास्ते में दुर्गाजी का मंदिर पड़ता था, जहाँ

पर भाई ने कहा कि मैं दुर्गाजी के दर्शन करके अभी आता हूँ। वह दर्शन करके दुर्गाजी को कुछ देना चाहता था, इसलिए उसने अपना सिर काट दिया।



धवल और उसकी पत्नी भाई का इंतजार करते रहे। जब भाई नहीं आया तो धवल ने कहा मैं देखकर आता हूँ।

अंदर जाकर जब उसने भाई का कटा हुआ सिर देखा तो धवल सोचा मुझे भी दुर्गाजी को कुछ देना चाहिए, और उसने भी अपना सिर काट दिया।



लड़की ने बहुत देर तक दोनों का इंतजार किया और जब वे दोनों वापिस नहीं आए तो वह मंदिर में गई।

दोनों के सिरों को कटे हुए देखकर उसने जैसे ही अपना सिर काटना चाहा दुर्गा मां ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोली मैं तुम सबसे बहुत खुश हूँ और मैं इन्हें जिन्दा होने का वरदान देती हूँ।

तुम इनके सिरों को इनके धड़ से जोड़ दो तो ये जीवित हो जाएंगे।



लड़की ने गलती से अपने पति के धड़ से भाई का सिर जोड़ दिया और भाई के सिर से पति का धड़ जोड़ दिया। इसके बाद बेताल ने कहा “बुद्धिमान राजा अब बताओ कि लड़की का पति कौन हुआ?”

राजा ने सोचा और फिर जवाब दिया कि जिस धड़ पर लड़की के पति का सिर है वही लड़की का पति है क्योंकि सिर ही ज्यादा खास होता है।



इस पर बेताल बहुत खुश हुआ और उसने राजा को कहा-ओ बुद्धिमान राजा तुम बिल्कुल सही हो।
और वह उड़कर उसी पेड़ पर जाकर लटक गया।



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

KAPWING

विक्रम और बेटाल



'प्रतिष्ठित लोक-कथाएँ' विभिन्न कहानियों का ऐसा संग्रह है, जो बच्चों एवं नये वक्ता को दर्शाता है। यह कभी न भूलाने वाले वाली कहानियों का यह संग्रहण है जो पीढ़ी दर पीढ़ी भला जा रहा है।



हमारा उद्देश्य

हम बच्चों को अच्छी, रोचक और वैश्विक शिक्षा की कहानियाँ सुनने का अवसर देते हैं। बच्चों को शिक्षा देने वाली होने का कारण भारत में जीवित कहानी सुनने वाले बच्चों को शिक्षा देना है। हमारा उद्देश्य इन बच्चों को उचित, रोचक और बहुत कम सुनने की कहानियाँ उपलब्ध कराना है। इन कहानियों में वैश्व, भारतीय और भारतीय कहानियों का संग्रह है।

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें...

- श्री गणेश
- शीघ्र विजयी
- अकबर और बीरबल
- इतिहास
- अलीबाबा और चालीस चोर
- चीन में अलतोन
- अकबर-तामचीन
- श्री कृष्ण
- जय हनुमान
- रामायण
- श्री गौतम
- महाभारत
- गुरु नानक देव जी
- ग्यास की आवाज
- पंचांग (राष्ट्रीय प्रकाशन)
- अलक कथाएँ
- ईशान्वर रामायण
- मुर्खजी
- भक्त प्रताप
- राजा अशोक
- श्री विजयी
- ईशान्वर



MAPLE PRESS PRIVATE LIMITED

A-63, Sector-08, Noida-201301 (U.P.) India

Phone +91 0120 2490145, 85533581

fax +91 0120 2490145

email info@maplepress.co.in

website www.maplepress.co.in